साप्ताहिक
Live not just breaTHE

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/16-18

# दि कार्मिक पोस्ट

वर्ष : 5, अंक : 11 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 6 नवंबर से 12 नवंबर 2019 पेज : 4 कीमत : 3 रुपये

# प्रदूषण के मुद्दे पर उद्यमियों को पर्यावरण मंजूरी के लिए मंत्रालय आने की जरूरत नहीं - जावड़ेकर

**नई दिल्ली। पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने रसायन उद्योग जगत के उद्यमियों से पर्यावरण प्रदूषण रोकने के लिए 'आत्म नियमन' की नीति का पालन करने की अपील करते हुए कहा कि मोदी सरकार सभी क्षेत्रों में आत्म नियंत्रण और नियमन के लिए संस्थागत विकास की नीति को लागू कर ऐसे उद्यमियों को पर्यावरण मंजूरी के लिए बार-बार मंत्रालय आने से मुक्ति देने को तैयार है, जो अपनी औद्योगिक इकाई का प्रदूषण बोझ बढ़ने को रोकने में कामयाब हैं।**

जावड़ेकर ने रसायन उद्योग क्षेत्र द्वारा 'पर्यावरण हितैषी सतत विकास' पर आयोजित सम्मेलन में कहा, 'अगर रसायन उद्योगों का प्रदूषण बोझ नहीं बढ़ता है तो उन्हें बार-बार मंत्रालय में आने की जरूरत नहीं रहेगी. हम उन्हें (रासायनिक उद्योगों) जिम्मेदारी के निर्वाह के साथ स्वतंत्रता (रिस्पांस्बिल फ्रीडम) देने को तैयार हैं, लेकिन उन्हें पर्यावरण की सजगता से देखभाल करने की प्रणाली संस्थागत आधार पर विकसित करनी होगी।'

उल्लेखनीय है कि रासायनिक क्षेत्र के उद्योगों को अपनी औद्योगिक गतिविधियां जारी रखने के लिए निश्चित समयांतराल के बाद पर्यावरण मंत्रालय से मंजूरी लेनी होती है. इसके लिए उन्हें यह बताना होता है कि पिछली मंजूरी के दौरान औद्योगिक इकाई से पर्यावरण पर अतिरिक्त बोझ नहीं पड़ा है।

उन्होंने देश के सतत विकास के लिए पर्यावरण संरक्षण को अनिवार्य अंग बताते हुए कहा कि पर्यावरण के लिए संकटकारी बने प्लास्टिक का इस्तेमाल समस्या का कारण नहीं है, बल्कि प्लास्टिक कचरे का प्रबंधन नहीं हो पाने के कारण प्लास्टिक को पुन: उपयोग में लाये जाने योग्य नहीं बना पाना समस्या की मूल वजह है।

इस दौरान जावड़ेकर ने रासायनिक उद्योग जगत के कारोबारियों से कचरा प्रबंधन, अधिकतम जल संचयन और पानी को पुन: प्रयोग में लाए जाने पर की जरूरत पर बल देते हुए कहा कि इन उपायों के साथ ही भारत का रसायन उद्योग क्षेत्र सतत विकास को सुनिश्चित कर सकता है।

उन्होंने कहा 'आज भारत के रासायनिक उद्योग जगत की वैश्विक बाजार में हिस्सेदारी तीन प्रतिशत है, इसे दस प्रतिशत तक ले जाने के लक्ष्य को हासिल करने के पर्यावरण हितैषी उपाय सुनिश्चित कर भारतीय रासायनिक उद्योग जगत विश्व में नेतृत्व कर सकता है।'

जावड़ेकर ने मीडिया, फिल्म और विज्ञापन सहित अन्य क्षेत्रों में स्वनियमाक संस्थाओं का हवाला देते हुए कहा कि सरकार सभी औद्योगिक क्षेत्रों में भी संस्थागत स्वनियमन की पैरोकार है. इसके लिए उद्योग जगत को आत्म नियंत्रण की छूट देने के लिए सरकार तैयार है. लेकिन उन्हें मजबूत और प्रभावी स्वनियमन प्रणाली विकसित करनी होगी, तब ही सतत विकास के लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है।

उन्होंने भारतीय कंपनी द्वारा एक ही उत्पाद के विनिर्माण में अलग-अलग देशों के लिए रसायनों की अलग-अलग मात्रा के इस्तेमाल की प्रवृत्ति को अनुचित बताते हुए कहा कि भारत के लिए कोई कंपनी जो उत्पाद बना रही है, उसकी गुणवत्ता किसी अन्य देश में ज्यादा अच्छी हो, यह उचित नहीं है।

# भारत इस साल तोड़ेगा चक्रवातों का अपना रिकॉर्ड

**नईदिल्ली। मौसम का पूर्वानुमान लगाने वाली निजी एजेंसी स्काईमेट ने अपने नए बुलेटिन में कहा है कि भारत इस साल यानी 2019 में पिछले साल (2018) के सात चक्रवातों का अपना रिकॉर्ड तोड़ देगा। पिछले साल देश ने एक साल में उष्णकटिबंधीय चक्रवातों की मार के 33 साल के रिकॉर्ड को तोड़ दिया था।**

स्काईमेट द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है कि 9 नवंबर से एक नया चक्रवाती तूफान आंध्र प्रदेश और ओडिशा राज्य को प्रभावित करेगा। इसे बुलबुल नाम दिया गया है। यह 2019 का सातवां चक्रवात है, जो भारत को प्रभावित करेगा। 2018 में भी सात चक्रवातों का रिकॉर्ड बना था। विज्ञप्ति में संभावना जताई गई है कि 2019 में 2018 की संख्या पार हो सकती है।

विज्ञप्ति के मुताबिक, भारत के पूर्वी तट विशेष रूप से आंध्र प्रदेश और ओडिशा के बीच 9-12 नवंबर के बीच मूसलाधार बारिश का पूर्वानुमान है।

वर्तमान में उत्तरी अंडमान सागर के ऊपर एक कम दबाव का क्षेत्र विकसित हो गया है। 5-6 नवंबर तक यह बंगाल की पूर्व-मध्य खाड़ी पर एक दबाव बन जाएगा। स्काईमेट ने कहा कि वर्तमान में, हम उम्मीद करते हैं कि पश्चिम-उत्तर-पश्चिम की दिशा में सिस्टम का दबाव जारी

रहेगा और आगे चलकर एक बड़े दबाव के बाद एक चक्रवात में तब्दील हो जाएगा।

चक्रवात में दबाव को कम करने के लिए समुद्री तापमान अनुकूल है। समुद्र की सतह का तापमान लगभग 29-30 डिग्री सेल्सियस है। स्काईमेट के मौसम विशेषज्ञों के अनुसार यह चक्रवात की तीव्रता के लिए एक उपयुक्त स्थिति है। इससे आंध्र प्रदेश और ओडिशा के तटीय इलाकों में भारी वर्षा होगी।

मौसम विभाग (आईएमडी) के उत्तर भारतीय महासागर पर उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के लिए क्षेत्रीय विशेष मौसम विज्ञान केंद्र के अनुसार 2018 में उत्तर हिंद महासागर क्षेत्रों पर चक्रवाती गड़बड़ी की लंबी अवधि (एलपीए) औसत से आगे निकल गई। पिछले साल 14 ऐसी घटनाएं हुईं जबकि सालाना औसत 12 है। इनमें से सात उष्णकटिबंधीय चक्रवातों में बदल गए। यह प्रति वर्ष 4.5 चक्रवात के औसत से बहुत अधिक है।

1985 में एक वर्ष में सात चक्रवात विकसित हुए थे। इसमें 2 चक्रवाती तूफान, 1 गंभीर चक्रवाती तूफान, 3 बहुत गंभीर चक्रवाती तूफान और 1 अत्यंत गंभीर चक्रवाती तूफान शामिल थे।

हालांकि 2017 में उष्णकटिबंधीय चक्रवातों की संख्या लंबी अवधि के औसत से कम थी। इस साल तीन उष्णकटिबंधीय चक्रवात आए। उत्तर हिंद महासागर (यानी, बंगाल की खाड़ी और अरब सागर) में पिछले दशकों के दौरान गंभीर चक्रवात आवृत्ति में तीन गुना वृद्धि दर्ज की गई है।

# पर्यावरण को बर्बाद कर रही भारत की पर्यटन संस्कृति

भारतीय पर्यटन उद्योग से हर साल लगभग 250 मिलियन टन से अधिक कार्बन डाई ऑक्साइड का उत्सर्जन होता है, जो कि भारत के कुल छ्व2 उत्सर्जन का लगभग 10त्न है। चिंताजनक बात यह है कि यह आंकड़ा साल दर साल तेजी से बढ़ता जा रहा है।

क्या होगा यदि मैं आपसे कहूं कि हमें अमरनाथ और वैष्णो देवी जैसे धार्मिक स्थलों पर तीर्थयात्रियों की संख्या को सीमित करने की आवश्यकता है? क्या होगा अगर मैं आपको बताऊं कि शिमला, महाबलेश्वर और गंगटोक जैसे हिल स्टेशनों पर उनकी क्षमता से अधिक मात्रा में पर्यटक आ रहे हैं और उन्हें रोकने की जरुरत है? कई लोग इसे संविधान में उल्लिखित स्वतंत्रता के अधिकार और धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकारों के उल्लंघन के रुप में देखने लगेंगे। लेकिन सच्चाई यही है कि ऐसी जगहें अपने अस्तित्व को बचाने की लड़ाई लड़ रही हैं और इसके लिए हमें पर्यटकों की संख्या को सीमित करने की जरुरत है।

इस साल जून में, मनाली में पर्यटकों की संख्या इतनी अधिक हो गई थी कि हजारों वाहनों ने इस हिल स्टेशन के सभी छोटे और बड़े रास्तों को जाम कर दिया था। इस जाम की वजह से कुल्लू से रोहतांग पास जाने वाले रास्ते पर हजारों पर्यटक पूरी रात फंसे रहे। लोग खुले में शौच करने को मजबूर हो गए थे और वायु प्रदूषण का स्तर भी काफी बढ़ गया था।

इस तरह की स्थिति सभी प्रमुख पर्यटन केंद्रों पर होने की संभावना है। कारण बहुत साफ है- जैसे-जैसे भारत का निम्न-मध्यम वर्ग अमीर हो रहा है और लोगों के पास खर्च करने के लिए अतिरिक्त पैसे भी बढ़ रहे हैं। पर्यटन उनको आकर्षित कर रहा है। यही कारण है कि भारत में यात्रा और पर्यटन से जुड़ा क्षेत्र सबसे तेजी से विकसित होने वाले उद्योगों में से एक है। 2018 की जीडीपी में इसका योगदान लगभग 9त्न यानी लगभग 17.5 लाख करोड़ रुपये था।

किन यह विकास पर्यावरण और पारिस्थितिकी से समझौते के बदले हो रहा है। दुनिया भर में तेजी से हो रहे पर्यावरण परिवर्तन में पर्यटन क्षेत्र पर बढ़ रहे दबाव का भी अहम योगदान है। भारतीय पर्यटन उद्योग से हर साल लगभग 250 मिलियन टन से अधिक कार्बन डाई ऑक्साइड का उत्सर्जन होता है, जो कि भारत के कुल छ्व2 उत्सर्जन का लगभग 10त्न है। चिंताजनक बात यह है कि यह आंकड़ा साल दर साल तेजी से बढ़ता जा रहा है।

हालांकि कई पर्यटक स्थल ऐसे भी हैं जो कि अपने आप को प्रदूषण से बचाए रखे हैं, लेकिन अधिकतर पर्यटक स्थलों की हालत बहुत खराब है और वे लगातार प्रदूषित हो रहे हैं। खासकर भारत का हिमालयी क्षेत्र ऐसे पर्यटन का केंद्र बन चुका है।

अगर हम लद्दाख का ही उदाहरण लें। ठंडा रेगिस्तान कहे जाने वाले इस इलाके में जल संसाधनों की सीमित उपस्थिति है। यहां के स्थानीय लोग इस बात को समझते भी हैं और प्रतिदिन 25 लीटर से कम पानी का ही उपयोग करते हैं। लेकिन यहां आने वाले पर्यटक दिन भर में करीब 75 से 100 लीटर पानी का उपभोग करते हैं।

लद्दाख में लगभग 700 होटल हैं। हर साल यहां लगभग 2.5 लाख पर्यटक आते हैं, जो कि क्षेत्र की आबादी के बराबर है। इससे क्षेत्र के जल संसाधनों पर दबाव पड़ता है। लद्दाख के प्रमुख शहर लेह में पानी का प्रमुख स्त्रोत सिंधु नदी है। सिंधु नदी की वजह से यहां का जलस्तर ठीक-ठाक है और लोग बोरवेल की मदद से जमीन से पानी निकालते हैं।

लेकिन लेह में बोरवेल की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, जिसका प्रभाव लेह के गिरते जलस्तर पर दिख रहा है। इसका सीधा प्रभाव लेह के स्थानीय लोगों पर पड़ेगा जो पेयजल और कृषि उपयोग के लिए इस पानी का प्रयोग करते हैं। लद्दाख लंबे समय तक ऐसे पर्यटन दबाव को सह नहीं पाएगा।

लद्दाख की तरह ही कई और पर्यटन केंद्र भी कुछ इसी तरह के पर्यावरणीय दबाव से गुजर रहे हैं। उदाहरण के तौर पर, तमिलनाडु के पर्यटन पर्वतीय क्षेत्र कोडाइकनाल में पर्यटकों की संख्या पिछले दस वर्षों में चार गुना बढ़ गई है। पर्यटकों की इस बढ़ती संख्या कारण इस इलाके को पानी की कमी का सामना करना पड़ रहा है। इसके अलावा यहां का सीवेज सिस्टम प्रभावित हुआ है, वायु प्रदूषण में वृद्धि हुई है और अधिक सड़कें बनाने के लिए जंगलों का कटान भी हुआ है। पर्यटकों द्वारा प्लेट, चम्मच, स्ट्रॉ और बोतलों के अतिशय उपयोग के कारण इस क्षेत्र के प्लास्टिक प्रदूषण में भी वृद्धि हुई है। पर्यावरण विज्ञान के अनुसार हर क्षेत्र की अपनी एक वहन क्षमता होती है, जो संसाधनों की उपलब्धता और उनके उपयोग पर निर्भर करती है। एक बार भी हम उस क्षमता को पार करते हैं, उसी वक्त पर्यावरण और पारिस्थितिकी को नुकसान पहुंचने लगता है। भारत में कई ऐसे पर्यटन स्थल, विशेष रूप से हिल स्टेशन, तीर्थ स्थल और वन्यजीव अभयारण्य हैं, जो अपनी वहन क्षमता को पार कर गए हैं। कई जगहों पर यह वहन करने की क्षमता क्षेत्र की भौतिक सीमाओं के कारण नहीं बल्कि संसाधनों के कुप्रबंधन की वजह से अधिक सीमित हो गई है।

## नासा से ताजा तस्वीरें

# दिखाई पड़ी मंगल की शुष्क झील!



**मंगल ग्रह पर जीवन के अवशेष खोजतीं अमेरिकी अतंरिक्ष एजेंसी नासा के क्यूरोसिटी रोवर की ताजा तस्वीरें**

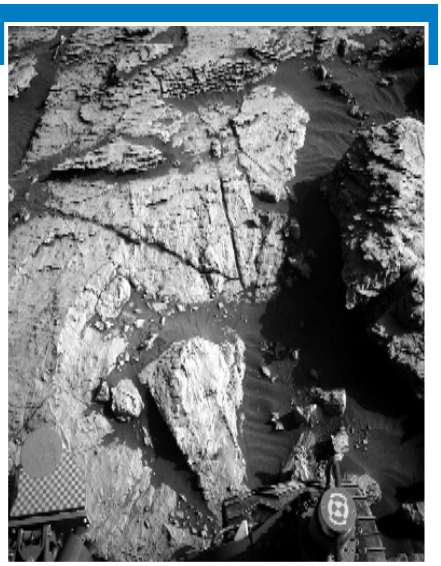

**क्या मंगल ग्रह पर जीवन था? मंगल ग्रह पर अतीत में जीवन होने की आशंका और उसके निशानों व अवशेषों की तलाश लगातार जारी है। अमेरिकी अतंरिक्ष एजेंसी नासा के मार्स क्यूरोसिटी रोवर की ताजा तस्वीरों ने एक बेहद सूनसान पहाड़ी क्षेत्र की तस्वीर साझा की है। यह 95 मील चौड़ा गेल क्रेटर पहाड़ी बेसिन क्षेत्र है। जहां एक किनारा दिखाई दे रहा है। अभी ऐसा कयास लगाया जा रहा है कि इसी किनारे पर एक झील बहती थी जो लंबे अंतराल के बाद सूख गई। रेत और चट्टानों के बीच दरारें भी कुछ ऐसा ही इशारा देती हैं। हाल ही में जर्नल नेचर में भी इस शुष्क झील के बारे में एक अध्ययन प्रकाशित किया गया था। 2012 में नासा ने क्यूरोसिटी रोवर को मंगल ग्रह भेजा था। क्यूरोसिटी रोवर का काम मंगल ग्रह के अतीत में जीवन होने के सबूत तलाशना है। लाल ग्रह पर खारे पानी के होने का सबूत मिला था, साथ ही कुछ अन्य संकेतों के बाद यह माना गया था कि मंगल ग्रह पर सूक्ष्मजीवों का संसार रहा होगा।**

पर्यावरण पर ग्लोबल रिपोर्ट

देश की 3.60 करोड़ आबादी भयावह प्राकृतिक आपदा के मुहाने पर खड़ी है. ऐसी आशंका जताई जा रही है कि अब से करीब 30 साल बाद मुंबई, कोलकाता समेत देश के कई तटीय इलाके डूब जाएंगे. या फिर इन्हें हर साल भयानक बाढ़ का सामना करना पड़ेगा।

# 2050 तक डूब जाएंगे मुंबई-कोलकाता, 3.5 करोड़ लोगों पर खतरा

देश की 3.60 करोड़ आबादी भयावह प्राकृतिक आपदा का मुहाने पर खड़ी है. ऐसी आशंका जताई जा रही है कि अब से करीब 30 साल बाद मुंबई, कोलकाता समेत देश के कई तटीय इलाके डूब जाएंगे. या फिर इन्हें हर साल भयानक बाढ़ का सामना करना पड़ेगा. इन इलाकों को मॉनसूनी मौसम में भारी बाढ़ का सामना करना पड़ सकता है. अमेरिकी संस्थान क्लाइमेट सेंट्रल की एक रिपोर्ट में यह खुलासा हुआ है. इस रिपोर्ट के अनुसार इस सदी के मध्य तक ग्लोबल वार्मिंग के कारण समुद्र का जल-स्तर तेजी से बढ़ा तो भारत भी उससे अछूता नहीं रहेगा।

इस रिपोर्ट के अनुसार यह माना जा रहा था कि इससे वे हिस्से पानी में डूब जाएंगे, जो तटों के किनारे बसे हैं. या जिनका भू-स्तर काफी नीचे है. इस रिपोर्ट के मुताबिक समुद्री जलस्तर में इजाफा होने से 2050 तक दुनिया भर के 10 देशों की आबादी पर बहुत बुरा असर पड़ेगा. तेज शहरीकरण एवं आर्थिक वृद्धि के चलते तटीय बाढ से मुंबई और कोलकाता के लोगों को सबसे ज्यादा खतरा है।

नासा के शटल राडार टोपोग्राफी मिशन के जरिए हुए अध्ययन से ये नतीजे निकाले गए हैं कि साल 2050 तक समुद्र का जल स्तर इतना बढ़ जाएगा कि भारत के मुंबई, नवी मुंबई और कोलकाता जैसे महानगर भी सदा के लिए जलमग्न हो सकते हैं. इससे करीब तीन करोड़ लोगों को विस्थापन की समस्या से जूझना पड़ सकता है।

**1. सूरत-** 50 लाख की आबादी वाला सूरत को हर साल बाढ़ की भयावह त्रासदी का सामना करना पड़ सकता है. यहां समुद्र का जलस्तर काफी तेजी से बढ़ता हुआ दर्ज किया जा रहा है।

**2. कोलकाता-** 1.50 करोड़ की आबादी वाला यह शहर और प. बंगाल की राजधानी को सबसे ज्यादा खतरा बंगाल की खाड़ी और हुगली नदी की शाखाओं के जलस्तर बढ़ने से है. कोलकाता हुगली नदी के बाढ़ से ज्यादा प्रभावित हो सकता है।

**3. मुंबई-** 1.80 करोड़ की आबादी वाली देश की आर्थिक राजधानी वैसे ही हर साल बाढ़ से परेशान होती है. लेकिन 2050 तक इसकी हालत बदतर हो जाएगी. तटीय बाढ़ की वजह से मुंबई के कई इलाके डूब जाएंगे।

**4. ओडिशा-** ओडिशा के पारादीप और घंटेश्वर जैसे तटीय इलाकों में रहने वाले करीब 5 लाख लोगों की आबादी 2050 तक तटीय बाढ़ की जद में आ जाएगी. यहां भी खतरा बढ़ा जाएगा।

**5. केरल-** पिछली साल आई बाढ़ ने केरल में 1.4 करोड़ लोगों को प्रभावित किया था. 2050 तक अलापुझा और कोट्टायम जैसे जिलों को तटीय बाढ़ जैसी आपदाओं का सामना करना पड़ेगा।

**6. तमिलनाडु-** इस राज्य के तटीय इलाके भी बाढ़ और बढ़ते समुद्री जलस्तर से अछूते नहीं रहेंगे. इसमें चेन्नई, थिरवल्लूर, कांचीपुरम प्रमुख हैं. अकेले चेन्नई में 70 लाख से ज्यादा लोग रहते हैं. जिन्होंने हाल ही में बाढ़ और सूखे दोनों की समस्या का सामना किया है।

## इन देशों को भी है बड़ा खतरा

2050 तक समुद्र की सतह में इजाफा होने से दुनिया भर में जिन 10 देशों की आबादी सबसे ज्यादा प्रभावित होगी उनमें से 7 देश एशिया प्रशांत क्षेत्र के हैं. सबसे ज्यादा प्रभावित होने वाले देशों में भारत सबसे ऊपर है. भारत के लगभग 4 करोड़ लोग जोखिम में होंगे. बांग्लादेश के 2.5 करोड़, चीन के 2 करोड़ और फिलीपींस के तकरीबन 1.5 करोड़ लोगों को खतरा होगा. भारत में मुंबई और कोलकाता को, चीन में गुआंगझो और शंघाई को, बांग्लादेश में ढाका को, म्यांमार में यंगून को, थाईलैंड में बैंकाक को और वियतनाम में हो ची मिन्ह सिटी तथा हाइ फोंग को चिह्नित किया गया है. नया अध्ययन बता रहा है कि समुद्र का जल-स्तर बढ़ने से दुनिया की लगभग 30 करोड़ आबादी प्रभावित होगी. अकेले बांग्लादेश में 9 करोड़ से ज्यादा लोग बेघर हो जाएंगे।

# नौकरी छोड़ पर्यावरण की अलख जगाने निकला फरीदाबाद का ये युवक

**झज्जर। इन दिनों एनसीआर सहित देश के कई अन्य स्थानों पर प्रदूषण की स्थिति खतरनाक मोड़ पर है. लोगों ने जहां सुबह की सैर करना तक बंद कर दिया है और बचाव के लिए मास्क तक पहनने शुरू कर दिए है. वहीं इस भीड़ से अलग हटकर ग्लोबल वार्मिंग के प्रति जागरूकता का संदेश देने के लिए एक युवक ने देश में 13 हजार किलोमीटर की पदयात्रा शुरू की है।**

फरीदाबाद के रहने वाले अरुण मित्तल नामक ने अपनी यह पदयात्रा पिछले माह 14 अक्टूबर को शुरू की थी. विभिन्न स्थानों से होते हुए जब अरुण मित्तल पैदल चलकर झज्जर पहुंचे तो उस दौरान मीडिया के रूबरू हुए. उन्होंने कहा कि उन्होंने इंजीनरिंग की पढ़ाई की है और कुछ सालों तक एक बड़ी कम्पनी में बतौर इंजीनियर नौकरी भी की, लेकिन अचानक हुई मां की मौत के बाद उन्हें पर्यावरण को बचाने के लिए प्रेरण मिली

कि वह सम्पर्क अभियान के जरिए लोगों को स्वास्थ्य व फिटनेस के प्रति जागरू करे। उन्होंने कहा कि यह तभी सम्भव है जब हमारा पर्यावरण शुद्ध रहेगा. अरूण ने बताया कि अपनी इस पदयात्रा के दौरान वह रास्ते में पडने वाले स्कूल, कॉलेजों में पहुंचकर छात्रों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करते हैं. रास्ते में भी लोग उनसे उनकी पदयात्रा का मकसद पूछते है तो वह उन्हें व खासकर युवाओं को पर्यावरण के प्रति जागरूता का संदेश देते है। उन्होंने बताया कि अपनी पदयात्रा के दौरान वह देश के सभी 28 राज्यों से होकर गुजरेंगे. उनका मकसद है कि भले ही वह अपनी इस पदयात्रा के दौरान सौ प्रतिशत लोगों को इसके प्रति जागरूक न कर पाए. लेकिन उनका यह भी मानना है कि यदि वह पांच प्रतिशत लोगों को भी इसके लिए सजग कर पाए तो वह अपनी पदयात्रा सफल मानेंगे. उन्होंने कहा कि उनकी इस पदयात्रा के लिए कुछ संस्थाएं फंडिंग करती है और लोकल लोगों से भी उन्हें मदद मिलती है. यहां तक की नौकरी में रहकर जो उन्होंने जमा पूंजी की थी वह भी इस पदयात्रा में ही वह खर्च कर रहे हैं।

# ग्रामीण भारत में आज भी महिलाओं के लिए लग्जरी है बाथरूम!

आज आजादी के 72 साल बाद, जब दुनिया में महिलाएं चांद पर जाने लगी है और नित नयी ऊंचाईयां छू रही है, वहां आज भी इस देश में बसने वाली लाखों महिलाओं को रोज यह सोंचना पड़ता है कि कल वो कहां नहायेंगी । भले ही भारत ने 10 करोड़ शौचालयों निर्माण करके कीर्तिमान बना लिया हो, पर क्या महिलाओं के लिए बाथरूम का निर्माण स्वच्छता और नारी के सम्मान से जुड़ा मुद्दा नहीं है ? और यदि है तो हमारे नीति निर्माताओं का ध्यान उस ओर क्यों नहीं जाता? आखिर और कब तक नारियों को इसके लिए संघर्ष करना होगा ? भारत में आज भी ग्रामीण महिलाओं के लिए बाथरूम एक लक्जरी हैं, उन्हें कभी भी इसकी आवश्यकता महसूस ही नहीं होती । क्योंकि सालों से चली आ रही प्रथा, पैसे की कमी और अन्य जरुरी मुद्दों ने उन्हें सुरक्षित स्थान पर स्नान करने जैसी बात पर विचार करने की अनुमति ही नहीं दी है । हालांकि देश में कुछ गैर-सरकारी संगठन हैं जिन्होंने बाथरूम और शौचालय का निर्माण करके इस दिशा में ठोस प्रयास किए हैं । लेकिन संख्या में वो कुछ गिने चुने ही हैं, उन्हें हम सिर्फ अपवाद ही कह सकते हैं । भारतीय समाज में बाथरूम कभी भी प्राथमिक मुद्दा रहा ही नहीं, न ही महिलाओं ने कभी इस पर तबज्जो दी।

लेकिन झारखण्ड के गुमला जिले में बसे तेलया गांव की महिलाओं के मन में उनकी प्राथमिकताएं स्पष्ट थीं। उन्होंने न केवल बाथरूम के महत्व को महसूस किया बल्कि उसे अपने दैनिक जीवन के एक अभिन्न पहलू के रूप में भी माना। यह ऐसी महिलाएं थीं जिन्होंने फैसला किया और हर घर के लिए एक अलग बाथरूम बनाने की मांग की। और उनकी इस मांग को एक स्थानीय एनजीओ प्रदान के सामने रखा गया, जिसने न केवल उन्हें प्रोत्साहित किया बल्कि उसको पूरा करने में उनका भरसक सहयोग भी किया । यह सब तब शुरू हुआ जब स्थानीय एनजीओ प्रदान द्वारा महिलाओं को विकास से जुडी अपनी आवश्यकता को व्यक्त करने के लिए कहा गया, जिससे उनका जीवनस्तर सुधर सके, पर वो खेत से जुडी हुई नहीं होने चाहिए । महिलाओं ने आपसी सहमति के बाद सुझाव दिया कि शौचालय के साथ-साथ यदि बाथरूम और नहाने के लिए पानी की व्यवस्था हो जाये तो वो उनके जीवन में बदलाव ला सकता है । यह सुझाव प्रदान के सदस्यों द्वारा सकारात्मक रूप से लिया गया । उन्होंने गांव की करीब 30 महिलाओं के साथ ओडिशा के लखनपुर का दौरा किया, जहां स्वयं सेवी संस्था ग्राम विकास ने बड़े पैमाने पर काम किया है । उन्होंने वहां शौचालय के साथ-साथ बाथरूम का भी निर्माण किया है, जिसमें पानी का कनेक्शन भी दिया गया है। इसी की प्रेरणा पर तेलया गांव की महिलाओं ने भी तय किया कि वह भी अपने गांव में शौचालय के साथ बाथरूम का भी निर्माण करेंगी ।

# क्या आगे भारत आरसीईपी में शामिल नहीं होगा?

भारत ने रीजनल कॉम्प्रिहेंसिव इकोनॉमिक पार्टनरशिप (आरसीईपी) में समझौता करने से इंकार कर दिया है, लेकिन क्या इसके साथ ही यह चर्चा भी समाप्त हो गई है और भारत आगे कभी आरसीईपी में शामिल नहीं होगा? यह सवाल अभी भी खड़ा हुआ है। केंद्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने कहा है कि भारत ने दरवाजे बंद नहीं किए हैं। अगर भारत द्वारा उठाए मसलों पर दूसरे देश तैयार हो जाते हैं तो बातचीत आगे जारी रह सकती है।

4 नवंबर को बैंकाक में हुई आरसीईपी की बैठक में भारत ने समझौते से बाहर होने का निर्णय लिया था। इसके बाद आरसीईपी देशों द्वारा जारी संयुक्त बयान में कहा गया था कि भारत को शामिल करने का प्रयास जारी रहेगा।

5 नवंबर को केंद्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि हमने वर्तमान में समझौते को मानने से इंकार कर दिया है। हमारी कई मांगें थी, जिन पर दूसरे देश तैयार नहीं हुए। हमने कृषि और डेयरी क्षेत्र को आरसीईपी समझौते से बाहर रखने की मांग की थी। भारत ऐसे किसी भी समझौते में शामिल होने के लिए तैयार नहीं है, जिससे भारत के किसान या पशुपालकों को नुकसान हो। इसके अलावा आरसीईपी समझौते में कहा गया था कि यदि किन्हीं दो देशों के बीच मोस्ट फेवर्ड नेशन (एमएफएन) का समझौता है तो उसका फायदा आरसीईपी में शामिल सभी देश उठा सकेंगे। गोयल ने कहा कि भारत ने इस पर आपत्ति जताई थी। गोयल ने बताया कि आरसीईपी समझौते की शर्त थी कि निवेश को लेकर देश में केंद्र सरकार, राज्य सरकार, स्थानीय निकाय या पंचायत स्तर पर कोई भी निर्णय लिया जाता है तो उस पर आरसीईपी में चर्चा होगी, जिसे भारत ने मानने से इंकार कर दिया। भारत ने कहा कि केवल केंद्र व राज्य सरकार के स्तर पर होने वाले निर्णयों पर चर्चा हो सकती है, लेकिन नगर निकाय या पंचायत स्तर पर होने वाले निर्णयों को आरसीईपी की चर्चा में शामिल नहीं किया जाना चाहिए। गोयल ने बताया कि भारत ऐसे भी समझौते का पक्ष लेने को तैयार नहीं था, जिसके तहत कोई देश, दूसरे देशों के रास्ते व्यापार कर सके।

# कानपुर के डंपिंग ग्राउंड में लगी आग, प्रदूषण से हुआ बुरा हाल

**कानपुर।** उत्तर प्रदेश के प्रमुख शहर कानपुर के भाउपुर स्थित कूड़ा डंपिंग ग्राउंड में दिवाली के दिन लगी आग अब तक नहीं बुझ पाई है। इससे जहां आसपास रहने वाले लोगों को सांस लेने में दिक्कत हो रही है। वहीं, कानपुर देश का दूसरा सबसे प्रदूषित शहर बना हुआ है। 5 नवंबर को सुबह 11 बजे कानपुर का एयर क्वालिटी इंडेक्स 476 था, जबकि पहले स्थान पर लखनऊ था, जिसका एक्यूआई 485 था।

भाउपुर में शहर भर का कूड़ा जमा किया जाता था, लेकिन पिछले कुछ समय से कूड़ा पूरी तरह भर चुका है, इसलिए कूड़ा डालना बंद कर दिया गया है, लेकिन यहां लगभग 25 लाख मीट्रिक टन कूड़ा पड़ा हुआ है, जिसने पहाड़ का रूप ले लिया है। इस ढेर में दिवाली की रात आग लग गई थी, तब से यहां जहरीला धुआं उठ रहा है। आग बुझाने के प्रयास इसलिए नहीं किए जा रहे हैं, क्योंकि जहां आग लगी है, वहां रास्ते में कूड़ा जमा होने के कारण अग्निशमन गाड़ियां नहीं पहुंच सकती। इसके चलते कानपुर-दिल्ली हाईवे ओर आसपास के दर्जनभर गांवों बदुआपुर, सरायमीता, भौंती आदि में लोगों का सांस लेना मुश्किल हो गया है। पूरे इलाके में गंदी बदबू फैली हुई है। लेकिन प्रशासन हाथ पर हाथ धरे बैठा है। भाउपुर में वर्ष 2009 में कूड़ा निस्तारण प्लांट बनाया गया था और ए2जेड नाम की कंपनी को निस्तारण की जिम्मेदारी दी गई थी। योजना के मुताबिक यहां गीले कूड़े से खाद और सूखे कूड़े से कबाड़ निकाल कर उसका निस्तारण किया जाना था।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008